तियानमेन से डिजिटल आतंक राज्य तक

लेखक -सी. राजा मोहन (निदेशक, इंस्टीट्यूट ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-I (विश्व इतिहास) एवं II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

4 जून, 2019

"सर्वविदित निगरानी राज्य के उदय ने डेंग शियाओपिंग की खुली अर्थव्यवस्था और चीन में बंद राजनीति के मॉडल को मजबूत किया है।"

इस हफ्ते तीन दशक पहले, चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने चीन के राजनीतिक तंत्र के उदारीकरण की मांग करते हुए छात्र विरोध पर कड़ी कार्रवाई की। बीजिंग के तियानमेन स्क्वायर में 1989 की शुरुआती गर्मियों में एक छोटे पैमाने पर शुरू हुआ आंदोलन कई शहरों और कस्बों में तेजी से फैल गया और इसे बहुत लोकप्रिय समर्थन प्राप्त हुआ। 3-4 जून की रात के दौरान, पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के सैनिकों ने नागरिक प्रतिरोध के खिलाफ अपनी लड़ाई लड़ी और वहाँ एकत्र हुए हजारों नागरिकों के वर्ग का खात्मा कर दिया।

तियानमेन में हुए खूनी खेल ने आधुनिक चीन के विकास और चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) के शासनकाल पर गहरा और असहनीय असर छोड़ा, जो 1949 में सात दशक पहले शुरू हुई थी। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने सर्वोच्च नेता डेंग शियाओपिंग के नेतृत्व में, विरोध प्रदर्शन को एक काउंटर क्रांतिकारी विद्रोह के रूप में दर्शाया, पार्टी सचिव झाओ जियांग और अन्य साम्यवादी नेताओं को छात्रों के प्रति सहानुभूति के रूप में देखा गया और फिर राजनीतिक दमन की लहर उठने लगी।

तियानमेन का विरोध प्रदर्शन राजनीतिक उदारीकरण के लिए लोकप्रिय संघर्षों और उन्हें कुचलने के लिए सत्तावादी शासकों की क्षमता का एक शक्तिशाली प्रतीक है। 'टैंक मैन' की छवि से अधिक इस स्थायी तनाव को कुछ भी नहीं कहा जा सकता है जहाँ एक अकेला नागरिक 5 जून की सुबह तियानमेन स्क्वायर में टैंकों की एक कतार को रोकने की कोशिश कर रहा था।

उस बदलाव को तेज करते हुए डिजिटल प्रौद्योगिकियों में क्रांति हुई है जिसने देशों को अपने नागरिकों पर अभूतपूर्व नियंत्रण रखने की अनुमति दी है। ऐसा लगता है कि अब बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शनों को रोकने के लिए भारी संख्या में सैनिकों और टैंकों को तैनात करने की आवश्यकता नहीं है जैसा कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टी ने जून, 1989 में किया था। बड़े पैमाने पर निगरानी, डेटा एनालिटिक्स और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर आधारित नए तकनीकी सिस्टम आधुनिक सत्तावादियों की मद्द कर रहे हैं। न केवल बड़े पैमाने पर विरोध के उद्भव को रोकने के लिए, बल्कि व्यक्तिगत असंतोष पर मुहर लगाने में भी ये सक्षम हैं।

तियानमेन में हुई विरोधाभासी पहल के बाद चेयरमैन डेंग ने चीन के राजनीतिक दमन का विरोध किया। 1992 में उन्होंने बड़े पैमाने पर आर्थिक सुधार किया। डेंग ने उदारीकरण और वैश्वीकरण के लिए चीन के आर्थिक अभिविन्यास को निर्णायक रूप से बदलकर वैचारिक रूढ़िवाद पर सीसीपी की वापसी को अवरुद्ध कर दिया। डेंग की रणनीति ने अंतर्राष्ट्रीय अनादर को सीमित कर दिया, जो कि तियानमेन में की गई कड़ी कार्रवाई के बाद हुआ। इसने चीन में पश्चिमी देशों के लिए व्यापक संभावनाओं को खोला और अमेरिका, यूरोप और जापान के साथ राजनीतिक जुड़ाव को नए सिरे से स्थापित किया।

डेंग के 1992 के सुधारों ने चीन को तेजी से आर्थिक विकास के रास्ते पर डाल दिया। एक दशक बाद, चीन दुनिया में दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने के रास्ते पर था और संयुक्त राज्य से आगे निकलने के लिए पूरी तरह से तैयार था। डेंग की रणनीति चीनी नागरिकों को राजनीतिक आज्ञाकारिता के बदले में एक नई आर्थिक समृद्धि प्रदान करने वाली प्रतीत हुई। एक लंबी अवधि में तीव्र आर्थिक विकास ने सामाजिक अशांति और राजनीतिक असंतोष को जन्म दिया।

चीन के कुछ विश्लेषकों का मानना था कि 'रेड पूंजीवाद' (एक साम्यवादी पार्टी द्वारा पूंजीवाद का निर्माण) का विरोधाभास अनिवार्य रूप से सीसीपी शासन को कमजोर करेगा। दूसरों को उम्मीद थी कि आर्थिक समृद्धि एक मध्यम वर्ग उत्पन्न करेगी, जिन्हें अधिक स्वतंत्रता प्राप्त होगी तथा चीन धीरे-धीरे लेकिन, निश्चित रूप से उदारवाद की ओर विकसित होगा।

हालांकि, दोनों प्रकार के विश्लेषकों को निराश होना पड़ा क्योंकि सीसीपी शासन कहीं अधिक लचीला और स्थिर लग रहा था, जिसकी किसी ने आशा नहीं की थी। चीन में तियानमेन के बाद के युग में एक तीसरा तत्व था, जिसने 'खुली अर्थव्यवस्था और

बंद राजनीति' के डेंग के मॉडल को मजबूत किया।

एक चौथाई सदी पहले, इंटरनेट युग को विस्तारित व्यक्तिगत और सामूहिक स्वतंत्रता की उम्मीद के साथ अपनाया गया। किसी अन्य राष्ट्र ने समाज के डिजिटल नियंत्रण के लिए नई संभावनाओं का प्रदर्शन नहीं किया है जैसा कि चीन ने पिछले कुछ वर्षों में किया है।

बीजिंग ने कई साधनों को नियोजित किया है, जिसमें इंटरनेट पर सेंसरशिप की 'महान दीवार' की स्थापना, सर्वव्यापी निगरानी कैमरों के माध्यम से व्यक्तियों की शारीरिक गति की निगरानी, व्यक्तियों की डिजिटल गतिविधि का विश्लेषण करना और चेहरे की पहचान जैसी तकनीकों में निवेश शामिल है। कई लोगों का ऐसा मानना है कि चीन में निगरानी तंत्र के निर्माण ने तीन दशक पहले घटित हुई तियानमेन जैसी घटना को दुबारा होने से रोका है।

बड़े पैमाने पर निगरानी के इस चीनी-मॉडल को अब एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के देशों में निर्यात किया जा रहा है। इसलिए, यह सत्तावादी बनाम लोकतांत्रिक राज्यों के संदर्भ में बहस को आगे बढ़ाने के लिए लुभाता है लेकिन सावधानी के साथ। चीन और अन्य देशों में 'निगरानी राज्य' के उदय का लोकतांत्रिक दुनिया में अपना संस्करण है अर्थात 'निगरानी पूंजीवाद' का उदय। उदाहरण के लिए, अमेरिकी प्रौद्योगिकी पर उपभोक्ता डेटा के संग्रह, हेरफेर और मुद्रीकरण का आरोप लगाया गया है।

हालाँकि,यहाँ एक अंतर है। अधिकांश लोकतंत्रों में, निगरानी पूंजीवाद के खिलाफ नकारात्मक विचार है। लेकिन हम एक डिजिटल आतंक राज्य के उद्भव को रोकने के लिए एक चुनौतीपूर्ण परियोजना की शुरुआत में हैं।

GS World टीम...

तियानमेन चौक नरसंहार

चर्चा में क्यों?

- 4 जून को तियानमेन चौक नरसंहार की 30वीं (30जी Tiananmen anniversary) बरसी है।
- इस वजह से बीजिंग के तियानमेन चौक (Tiananmen Square) पर सुरक्षाकर्मियों की भारी तैनाती की गयी है।
- चीन में आज भी कुछ लोग खोई हुई उस आशा और मारे गए दोस्तों व बच्चों का शोक मनाते हैं?
- 3-4 जून, 1989 को बीजिंग में सुधार समर्थक प्रदर्शनों पर खूनी प्रहार किये गये थे।

पृष्ठभूमि

- 04 जून, 1989 को मानव सभ्यता के इतिहास में काले दिन के तौर पर जाना जाएगा।
- इस दिन कम्युनिस्ट पार्टी के उदारवादी नेता हू याओबैंग की हत्या या मौत के विरोध में हजारों छात्र बीजिंग के तियानमेन चौक (Tiananmen Square) पर प्रदर्शन कर रहे थे।
- चीनी सेना ने निर्दोष लोगों पर फायरिंग की और उन पर टैंक दौड़ाए। सरकारी रिपोर्ट के मुताबिक, इसमें सैकड़ों लोग मारे गए थे, जबकि एक ब्रिटिश खुफिया राजनयिक दस्तावेज में कहा गया है कि इस नरसंहार में 10 हजार लोगों की मौत हुई थी।
- दुनिया भर में भले ही इस नरसंहार की आलोचना होती हो, लेकिन चीन की सरकार और प्रशासन 04 जून, 1989 को निर्दोष लोगों पर की गई सैन्य कार्रवाई को सही ठहराता है।

तियानमेन चौक नरसंहार को चीन ठहराता है सही

- चीनी प्रशासन और सरकार आज भी इस कदम को सही ठहराती है। चीन के रक्षा मंत्री ने तियानमेन चौक पर प्रदर्शनकारियों पर 1989 में की गई कार्रवाई को सही करार दिया।
- रक्षा मंत्री वेई फेंगहे ने सिंगापुर में क्षेत्रीय सुरक्षा के एक फोरम से कहा, 'वह घटना एक राजनीतिक अस्थिरता थी और केंद्र सरकार ने संकट को रोकने के लिए कदम उठाए, जो एक सही नीति थी।'

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. **निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये:-**

1. तियानमेन चौक चीन के बीजिंग शहर में स्थित है और इस वर्ष तियानमेन चौक नरसंहार की 30वीं वर्षगाँठ है।
2. चीनी कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना 1 जुलाई, 1921 को की गयी थी और इसके वर्तमान महासचिव शी जिनपिंग हैं।
3. चीन दुनिया में भारत के बाद दूसरी तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है।

उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य नहीं है/हैं?

(a) केवल 1
(b) 1 और 2
(c) केवल 3
(d) उपर्युक्त सभी

Q. Consider the following statements-

1. Tiananmen Square is located in the Beijing city of China and this year the 30th anniversary of the Tiananmen Square massacre.
2. The Communist Party of China was formed on July 1, 1921 and its current Secretary-General is Xi Jinping.
3. China is the second fastest growing economy after India in the world.

Which of the statement above is/are incorrect?

(a) Only 1
(b) 1 and 2
(c) Only 3
(d) All of the above

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न:- **"तियानमेन में हुआ विरोध प्रदर्शन राजनीतिक उदारीकरण के लिए संघर्षों और उन्हें कुचलने के लिए सत्तावादी शासकों की क्षमता का एक प्रतीक है।" चर्चा कीजिये।** **(250 शब्द)**

Q. "The Tiananmen protests have endured as a powerful symbol of the popular struggles for political liberalisation and the capacity of authoritarian rulers to crush them." Discuss. (250Words)

नोट : 3 जून को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(d) होगा।

Committed To